आँखें तेरी ग़ज़लें मेरी

प्रफुल्ल रंजन 'निर्मल'

आँखें तेरी ग़ज़लें मेरी

प्रफुल्ल रंजन 'निर्मल'

आवरण
कार्तिकेय शर्मा

ISBN : 978-81-970529-9-6

प्रथम संस्करण : 2025

समर्पण



अक्षुण्ण समय के शिलालेख जो हृदयों के हस्ताक्षर हैं।
जिनकी पावन स्मृतियों के नयनों से बहते निर्झर हैं।
षाष्टांग दण्डवत से अपने उन मात–पिता को करूँ नमन।
पूरे परिवार का सम्बल जो हृदयों की दिव्य धरोहर हैं।
जिनके भीतर के ईश्वरत्व ने मुझको यह वरदान दिया।
शब्दों से पूजा करने का अवसर बहुमूल्य प्रदान किया।
मेरे इस ग़ज़ल –संग्रह के जो दिव्य प्रेरणाश्रोत रहे।
उन मात–पिता ने सदा हृदय में ही मुझको स्थान दिया।

–प्रफुल्ल रंजन 'निर्मल'

तुम्हारी आँखें जो नीली दिखाई देती हैं।
मेरे क़लम को वही रौशनाई देती हैं।

समर्पण की गहराइयों का स्पर्श

जीवन वास्तव में सफ़र का नाम है। एक ऐसा सफ़र जिसमें निरन्तर चलते रहने की धुन में पता ही नहीं चल पाता कि कब पुराने साथी पीछे छूट गये और कब नये साथियों ने उँगली थाम ली। पता तब चलता है, जब थका-हारा इंसान कुछ पल सुस्ताने के लिए किसी ठाँव पर रुक जाता है और उसका सामना नये साथियों से होता है। लेकिन पुराने साथियों की यादें धड़कनों को लगातार सुगन्धियों से परिपूर्ण रखती हैं। इस सफ़र के दौरान बहुत से ऐसे पल आते हैं, जो व्यक्ति को उल्लासित, ऊर्जान्वित और आशान्वित करते हैं। साथ ही कुछ ऐसे क्षणों से भी साक्षात्कार होता है, जो घोर निराशाओं की डोर थमाकर अदृश्य हो जाते हैं। यद्यपि ये दोनों ही क्षण प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में आते हैं, लेकिन अन्तर केवल इतना है कि आम आदमी उनकी धारा में बह जाता है, जबकि कलाकार उन क्षणों से लाभ उठाते हुए उन्हें अपनी कला का माध्यम बना लेता है।

भाई प्रफुल्ल रंजन निर्मल जी भी ऐसे ही ग़ज़लकार हैं, जो अतीत की उँगली कसकर पकड़े हुए हैं। गुज़रे वक़्तों के इंद्रधनुषी रंग आज भी उनके साथ हैं, जो यह बता रहे हैं कि प्रेम समर्पण का नाम है, प्रेम वह दीपक है, जिसकी रोशनी सभी दिशाओं में फैलती है। प्रेम वह पुष्प है जिसकी सुगंध सभी को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। निर्मल जी के यहाँ प्रेम केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि ऐसी पवित्र भावना है, जो शृंगार को अध्यात्म की ओर उन्मुख करती है। कुछ शेर देखिए-

तू दर्द जिसके भी दिल में बसा दे जब चाहे
तो ख़ुद ही चैन भी दिल को दिला दे जब चाहे

बड़ी कशिश है मेरे दोस्त तेरे चेह्रे में
तू जिसको अपना दिवाना बना दे जब चाहे

कभी सिखा दे धड़कना तू पत्थरों को भी
कभी तू दिल को भी पत्थर बना दे जब चाहे

प्रेम समर्पण का दूसरा नाम है। निर्मल जी ने क्या ही ख़ूबसूरत शेर कहे हैं-

आँखों को ख़्वाबों से भरना अच्छा लगता है
आपसे दिल की बातें करना अच्छा लगता है

दुनिया की तो फ़ितरत है नफ़रत करना लेकिन
हमको प्यार में जीना-मरना अच्छा लगता है

पहले खिलना फूल की सूरत उसके दामन में
और फिर उसके हाथ बिखरना अच्छा लगता है

तुम्हारी आँखें जो नीली दिखाई देती हैं।
मेरे क़लम को वही रोशनाई देती हैं।

संग्रह में ऐसे बहुत-से शेर हैं, जो ज़िंदगी और रिश्तों की रहनुमाई करते दिखाई देते हैं। जिन्हें यहाँ दिया भी जा सकता है, लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप पुस्तक पूरी पढ़ें, स्वयं उन अशआर का आनंद लें और वाह-वाही कर निर्मल जी का हौसला बढ़ाएँ। 'आँखें तेरी ग़ज़लें मेरी' के प्रकाशन के अवसर पर भाई प्रफुल्ल रंजन 'निर्मल' जी को बहुत-बहुत बधाई और हार्दिक शुभकामनाएँ। माँ सरस्वती जी से प्रार्थना है कि वह इनकी साहित्यिक ऊँचाइयों को और उन्नत करें।

दिनांक : 26.10.2024 **- डा. कृष्णकुमार 'नाज़'**

9/3 हिमगिरि कालोनी, काँठ रोड,
मुरादाबाद-244001
मोबाइल : 99273-76877

अनुभूति की पराकाष्ठा पर प्रतिष्ठित ग़ज़लें

साहित्य, संगीत और कला दिल की दुनिया के वो स्थान हैं जहाँ जाने के लिए अनुभूति का पासपोर्ट होना ज़रूरी है।जब मन भावनाओं की उड़ान भरकर साहित्य के धरातल पर उतरता है तो उस धरातल पर बसे कल्पनाओं के लोक की सबसे सुन्दर गली की ओर बरबस क़दम मुड़ जाते हैं और वह गली है ग़ज़ल की गली।

मेरे बालसखा, सहपाठी, मित्र और भ्रातृभाव से ओतप्रोत व हितैषी प्रफुल्ल रंजन 'निर्मल' जी को, साहित्य के प्रति उनके गहरे लगाव और हृदय में पनपते सृजन के अंकुर ने बचपन से ही ग़ज़ल की गली की तरफ़ मोड़ दिया और कब ग़ज़लगोई के अंकुर ने विशालकाय वृक्ष का रूप ले लिया पता ही नहीं चला। माँ सरस्वती के वरदान से साहित्य-संगीत प्रेम और प्रतिभा भाई निर्मल जी को विरासत में मिली किन्तु उनकी लगन ने उन्हें इस मुक़ाम तक पहुँचाया कि आज बड़े से बड़े शाइर और कवि उनकी ग़ज़लों की प्रशंसा करते हैं और उनकी प्रतिभा का लोहा मानते हैं।

निर्मल जी का नवीनतम ग़ज़ल-संग्रह "आँखें तेरी ग़ज़लें मेरी" मेरे सामने है और मैं इतना अभिभूत हो गया हूँ कि जो महसूस कर रहा हूँ उसे कहने के लिए शब्द कम पड़ रहे हैं। निर्मल जी ने प्रेम और समर्पण पर तथा श्रृंगार के दोनों पक्षों संयोग एवं वियोग पर ग़ज़लें कही हैं।

तेरी यादों का इक रास्ता रह गया।
जिसपे तन्हा मैं चलता हुआ रह गया।

इस दीवानगी का आलम यह है कि किसी प्रिय के चले जाने के बाद ज़िन्दगी थम सी जाती है,जैसे इन्सान साँस लेना ही भूल जाता है और अवाक होकर शून्य की ओर देखकर बरबस कह उठता है--

जिस जगह मुझसे बिछड़े थे तुम एक दिन,
बस उसी मोड़ पर मैं खड़ा रह गया।

अपने महबूब की ओर देखते-देखते शाइर उसकी आँखों में इतना डूब जाता है कि न केवल एक दो मिसरे बल्कि पूरा ग़ज़ल-संग्रह ही आँखों के इर्द-गिर्द घूमता है,यह अनुभूति की पराकाष्ठा है।

हसीन वादी में उड़ते पंछी, ज़माने भर को बता रहे हैं।
कि मेरी आँखों से ख़्वाब उठकर, तुम्हारी पलकें सजा रहे हैं।

निर्मल जी के इस अप्रतिम ग़ज़ल-संग्रह की भूमिका लिखने का जब अवसर मिला तो मुझे लगा कि एक सच्चे ग़ज़लकार की भावनाओं को जनमानस तक पहुँचाने का यह सुअवसर है। अतः सुधी पाठकों से मेरा निवेदन है कि एक कलाकार को आपसे प्रशंसा के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं चाहिए होता जो आपकी ही भावनाओं को अपने मन से महसूस करके चित्रित करता है और आप तक पहुँचाता है, उसके लिए इतना तो कर्तव्य भी बनता है।

निर्मल जी के इस ग़ज़ल-संग्रह "आँखें तेरी ग़ज़लें मेरी" को पाठकों का भरपूर स्नेह व अपार सफ़लता मिले, यही कामना करता हूँ ताकि वे इसी प्रकार ऊर्जावान रहकर सृजन के क्रम को निर्बाध रखें और इसी प्रकार की कृतियाँ आँखों के सामने आती रहें।

भूदेव गौतम
(कवि)
चेयरमैन स्थायी लोक अदालत
फ़रुख़ाबाद (उ.प्र.)

अपनी बात

माँ शारदा की असीम अनुकम्पा से अपना पहला ग़ज़ल -संग्रह "आँखें तेरी ग़ज़लें मेरी" आपके हाथों में सौंपते हुए हर्षातिरेक का अनुभव हो रहा है। इससे पूर्व मेरा भजन-संग्रह "भक्ति-भागीरथी" प्रकाशित हुआ था। "आँखें तेरी ग़ज़लें मेरी" जैसा कि शीर्षक से स्पष्ट है, मुझमें ग़ज़ल कहने की प्रेरणा का संचार आँखों से ही हुआ है।

होश सँभालते ही बचपन में सर्वप्रथम मैंनें माता-पिता की आँखों में झाँककर कविता कहने की शुरुआत की। तत्पश्चात अपने गुरुजनों की आँखों में समाये हुए भावों-अनुभावों को अपनी ग़ज़लों में समाविष्ट किया। और उसके बाद तो निरन्तर अपने बन्धु-बान्धवों, दोस्तों व सभी चाहने वाले स्नेहिल जनों की आँखों ने मेरी ग़ज़लों की भावभूमि को संपुष्ट किया। माँ की गोद में खेलते हुए मासूम बच्चे की आँखें, जगत-नियन्ता भगवान श्री कृष्ण जी की अलौकिक आँखों की कल्पना मात्र से चित्रित आँखें, खेत में हल चलाते हुए किसान की आँखें, सरहद पर दुश्मन से जूझते सैनिक की आँखें, दिन भर बोझ ढोते मज़दूर की आँखें, शोषण, भ्रष्टाचार और बेरोज़गारी से ग्रस्त आम आदमी की आँखें, रोजी़-रोटी और जिजीविषा को संघर्षरत दीन-दुखियों की आँखें, जीवन-संग्राम से थके हुए सरशय्या पर चिरनिद्रा में विलीन व्यक्ति की खुली आँखें इत्यादि इन सब आँखों ने मिलकर मेरे अन्तस को झकझोर दिया और मुझे कविता कहने पर विवश कर दिया। इसके अलावा मेरे अन्तस को घूरती हुई मेरी अपनी आँखें और अपनी आँखों के आँसुओं में तैरती-उतराती हुई मौन अनुभूतियों तथा दिल के जज़्बात की ख़ामोशी का

बयान हैं मेरी ग़ज़लें। जहाँ तक प्रस्तुत संग्रह की बात है इसमें मैंने सिर्फ़ प्रेम की अनुभूतियों पर आधारित ग़ज़लें ही समाविष्ट की हैं।

इस सिलसिले में मैं ऋणी हूँ अपने सभी बुज़ुर्गों के प्रभावों व संस्कारों का, गुरुजनों का, माता-पिता का, बन्धु-बान्धवों का, सभी स्नेहिल दोस्तों का, पूरे परिवार का व सम्पूर्ण समाज का, जिन सब ने मिलकर मेरी काव्य-चेतना को गति व शक्ति प्रदान की।

निष्कर्षत: मैं कहूँगा कि ये मेरी ग़ज़लें नहीं बल्कि आप सभी की आँखें हैं जिन्हें मैं आप सभी ग़ज़ल के परस्तारों को ग़ज़लों के रूप में लौटा रहा हूँ।आप सभी इन ग़ज़लों में डूबकर आनन्द प्राप्त करेंगे और मुझे अपना स्नेह व आशीर्वाद प्रदान करेंगे, ऐसी मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है। हार्दिक धन्यवाद के साथ।

--प्रफुल्ल रंजन निर्मल

ग़ज़ल-क्रम

रोज़ की तरह न इन

रोज़ की तरह न इन होटों के रस्ते से चलो।
आज बोली यह ग़ज़ल आँखों के रस्ते से चलो।

प्यार कहता है तेरा, फूलों के रस्ते से चलो।
फ़र्ज़ कहता है मेरा, काँटों के रस्ते से चलो।

दिल तो कहता है चलो ख़ुशियों के रस्ते से चलो।
आँख कहती है मगर अश्कों के रस्ते से चलो।

बदगुमानी भी है उल्फ़त के सफ़र में लाज़िम,
खट्टे-मीठे से गिले-शिकवों के रस्ते से चलो।

ज़िन्दगानी का सफ़र तन्हा गुज़ारा भी तो क्या,
प्यार में डूबे हुए रिश्तों के रस्ते से चलो।

ज़िन्दगी जीनी है तो जीनी है यह सोच के बस,
मुस्तक़िल होके ज़रा साँसों के रस्ते से चलो।

आँख पत्थर हुई, दिल भी हुआ पत्थर 'निर्मल',
फिर भी तुम ज़िद पे हो बस जज़्बों के रस्ते से चलो।

तेरी यादों का इक रास्ता

तेरी यादों का इक रास्ता रह गया।
जिसपे तन्हा मैं चलता हुआ रह गया।

तूने अपना बना भी लिया ग़ैर को,
और मैं उम्र भर सोचता रह गया।

तेरे नज़दीक़ आ तो गया मैं मगर,
तुझसे मिलने में कुछ फ़ासला रह गया।

जाने किस मस्लेहत के तहत आज तक,
यह तेरा ख़त लिखा का लिखा रह गया।

होके क़ुर्बान तेरी मुहब्बत पे भी,
तेरी नज़रों में मैं बेवफ़ा रह गया।

जिस जगह मुझसे बिछड़े थे तुम एक दिन,
बस उसी मोड़ पर मैं खड़ा रह गया।

इक कशिश ही तो थी जो तेरे हिज्र में,
सिलसिला टूटकर भी जुड़ा रह गया।

देखने को तबाही का दौर आख़िरी,
एक आँसू पलक पर रुका रह गया।

ख़ाक हो जाता तो ग़म नहीं था मगर,
जिस्म 'निर्मल' मेरा अधजला रह गया।

इस क़दर अश्कों की गहराई

इस क़दर अश्कों की गहराई नहीं देखी गयी।
मुझसे उन आँखों की तन्हाई नहीं देखी गयी।

ईंट सीमेंट में सब चुन गये रिश्ते -नाते,
घर में दीवार जो खिंचवाई नहीं देखी गयी।

एक दिन दफ़्न मुझे कर ही दिया लोगों ने,
शहर भर से मेरी रुसवाई नहीं देखी गयी।

उम्र भर आँखों को आदत तो अँधेरों की रही,
उसने जब रौशनी दिखलाई नहीं देखी गयी।

दिल मुहब्बत से भरे होते तो कुछ बात भी थी,
दरम्याँ ख़ाली पड़ी खाई नहीं देखी गयी।

पैरवी झूट की करते रहे सब लोग वहाँ,
जब अदालत से भी सच्चाई नहीं देखी गयी।

कैसे हथियाने को तुम मेरी तरफ़ दौड़ पड़े,
तुमसे दौलत मेरे हाथ आई नहीं देखी गयी।

घर को फूलों से सजाया तो है अच्छा लेकिन,
तुमसे चौखट पे जमी काई नहीं देखी गयी।

चल दिये आप भरी बज़्म से उठकर 'निर्मल',
आप से मेरी पज़ीराई नहीं देखी गयी।

दिल तेरा मेरी मुहब्बत

दिल तेरा मेरी मुहब्बत से कहीं गहरा न हो।
बस यही डर है तुझे इस बात का शिकवा न हो।

प्यार में बस यह अँदेशा है कहीं ऐसा न हो।
मैं तेरा हूँ, तू है उसका, वो मगर तेरा न हो।

इश्क़ की तासीर ऐसी है कि मुमकिन ही नहीं,
प्यार में डूबे यह दिल और डूबकर गहरा न हो।

उम्र भर खेला वो तुझसे इक खिलौने की तरह,
मत समझ आशिक़ उसे जो ग़म से संजीदा न हो।

उसने नज़रें तो झुका लीं थीं मगर मुमकिन नहीं,
प्यार से उसने नज़र भरकर मुझे देखा न हो।

प्यार के बारे में सोचा था तो नामुमकिन है दोस्त,
दर्द के बारे में मैंने ग़ौर से सोचा न हो।

तुझसे रिश्ता तोड़ना मंज़ूर है मुझको मगर,
सोचता हूँ तू मुहब्बत में मेरी रुसवा न हो।

वस्ल क्या तेरी जुदाई पर भी मेरा हक़ नहीं,
यूँ मुहब्बत में कोई मेरी तरह तन्हा न हो।

ऐसा इक लम्हा भी याद आता नहीं ''निर्मल' मुझे,
जब जुदाई में तेरी यह दिल मेरा तड़पा न हो।

हसीन वादी में उड़ते पंछी

हसीन वादी में उड़ते पंछी, ज़माने भर को बता रहे हैं।
कि मेरी आँखों से ख़्वाब उठकर, तुम्हारी पलकें सजा रहे हैं।

हज़ार ज़ख़्मों को मैं भुला दूँ, अगर तू अपनी हँसी लुटा दे।
वगरना आँसू न बुझने वाली, इक आग मुझमें लगा रहे हैं।

वो महफ़िल -ए-शब गुज़र चुकी है, मगर यह महसूस हो रहा है।
धड़कते दिल में तेरे तराने, अभी भी हलचल मचा रहे हैं।

तुम्हें क़सम मेरी चाँद-तारो, ज़रा तो नज़रें बचा लो अपनी,
हैं वस्ल के ये जवान लम्हें, वो रुख़ से परदा हटा रहे हैं।

ग़मों की आँधी निकल चुकी है, मैं बिखरे तिनके बटोर लाऊँ।
चमन में फिर से परिन्दे मिलकर, नये नशेमन बना रहे हैं।

है जुस्तजू तेरी साथ मेरे, मैं इस सफ़र में नहीं हूँ तन्हा,
हज़ारों साये हैं ख़ुशबुओं के, जो मुझको आगे बढ़ा रहे हैं।

मुझे यह तौफ़ीक़ दे मेरे रब, मैं आज जीभर के मुस्कुराऊँ,
मेरे सनम मुद्दतों में 'निर्मल', ग़रीबख़ाने पे आ रहे हैं।

सज-धज के मेरे ख़्वाबों

सज-धज के मेरे ख़्वाबों में आया न कीजिए।
यूँ धड़कनों को मेरी बढ़ाया न कीजिए।

मेरे जिगर से मेरा लहू खींचकर जनाब,
अपनी हथेलियों पे सजाया न कीजिए।

शरमा रहा है देख के वो चाँद आपको,
नज़रों को अपनी ऐसे झुकाया न कीजिए।

पहले ही जल रहा हूँ मुहब्बत की आग में,
इक दिलजले को और जलाया न कीजिए।

रह-रह के आ रही है मुझे याद आपकी,
यूँ हिचकियों को मेरी बढ़ाया न कीजिए।

दौलत का शहर है यह न समझेगा दर्द-ए-इश्क़,
'निर्मल ' सभी पे दिल को लुटाया न कीजिए।

छत से वो महव-ए-ख़्वाब

छत से वो महव-ए-ख़्वाब उतरी है।
सीढ़ियों से शराब उतरी है।

यह सुरूर-ए-नज़र है या कुछ और,
इक परी लाजवाब उतरी है।

नश्शा-ए-मय भी क्या उरूज़ पे है,
आज वो बेहिजाब उतरी है।

रात इतनी पी, होश ही न रहा,
दोपहर में जनाब उतरी है।

क्या ग़ज़ब की नशीली आँखें हैं,
दिल से खिंचकर शराब उतरी है।

दिल में तेरी झुकी -झुकी सी नज़र,
ख़त का लेके जवाब उतरी है।

पी तो दो घूँट है मगर 'निर्मल',
ज़हन में बेहिसाब उतरी है।

साज़-ए-दिल यकबयक बज

साज़-ए-दिल यकबयक बज उठा, गुनगुनाने लगीं चूड़ियाँ।
तुम ख़्यालों में क्या आ गये, खनखनाने लगीं चूड़ियाँ।

बज उठीं ऐसे शहनाइयाँ, तेरे आने का धोका हुआ,
जाने क्या सोचकर यूँ मुझे, आज़माने लगीं चूड़ियाँ।

तूने पकड़ी थी जब प्यार से, एक दिन यह कलाई मेरी,
याद मुझको दिलाकर वो दिन, अब सताने लगीं चूड़ियाँ।

लौटकर इक सहेली मेरी, पहली बार आई ससुराल से,
हाल उसका सुना तो मेरा, मुँह चिढ़ाने लगीं चूड़ियाँ।

एक लम्हा भी तेरे बिना, चैन से अब गुज़रता नहीं,
हाय तन्हाइयों में मेरा, दिल जलाने लगीं चूड़ियाँ।

रोज़ टकरा के हाथों से ये, पूछती हैं तुझे हर घड़ी,
मेरी नाज़ुक कलाई पे अब, ज़ुल्म ढाने लगीं चूड़ियाँ।

तन्हा बिस्तर पे 'निर्मल' मुझे, देखकर यूँ तड़पते हुए,
जिस्म से मेरे लग-लग के अब, कसमसाने लगीं चूड़ियाँ।

दिल जो चुपके से कहे

दिल जो चुपके से कहे, कहना मत।
प्यार तुझसे है मुझे, कहना मत।

कौन क्या किससे कहे, कहना मत।
कौन क्या किसकी सुने, कहना मत।

ख़त जो बेनाम ज़माने ने पढ़े,
तुझको मैंने ही लिखे, कहना मत।

दिल से महसूस जो करते हैं सभी,
कौन वो किससे कहे, कहना मत।

मतलबी यार ज़रूरत के समय,
जिस मुहब्बत से मिले, कहना मत।

जान जाने का कोई ग़म ही नहीं,
दिल के सब दर्द गये, कहना मत।

रौशनी कम लगी होगी इनको,
ये दिये दिन में जले, कहना मत।

भोला-भाला है बहुत तू 'निर्मल',
राज़ यह दिल में रहे, कहना मत।

यह उदास-उदास मौसम

यह उदास-उदास मौसम, उसी लम्हा खिल उठेगा।
कोई भँवरा आके जिस दम, किसी गुल को चूम लेगा।

मुझे काश इल्म होता, तो गुनाह मैं न करता,
कि सज़ायें मेरे हक़ में, कोई और काट देगा।

तू बड़ी-बड़ी किताबें, सभी पढ़ चुका है लेकिन,
मेरे दिल पे क्या लिखा है, कभी तू न पढ़ सकेगा।

तू हरा शजर है लेकिन, जो कटे तो उफ़ न करना,
तेरे साये को ज़माना, सदा ढूँढता रहेगा।

तू बचा रहा है दामन, मेरा दिल उमड़ रहा है,
मेरी आँख का हर आँसू, यह बता कहाँ गिरेगा।

तेरी ज़ात मोतबर है, यह हवा भी जानती है,
जो जला दिया है तूने, वो चिराग़ क्या बुझेगा।

मेरे पाँव लड़खड़ाये , इसी आस पर ही अक्सर,
कि वो अपने बाज़ुओं से, मुझे बढ़के थाम लेगा।

वो है चाँद आसमाँ का, उसे यूँ न देख 'निर्मल',
तेरे प्यार की कशिश में, वो ज़मीं से आ लगेगा।

मैं था तेरा तो मुझे

मैं था तेरा तो मुझे तू ही पराया क्यूँ था।
मुझको बतला, मैं तेरे शहर में रुसवा क्यूँ था।

तुमने ख़्वाबों का महल पहले सँवारा क्यूँ था।
जो सँवारा तो इसे ख़ुद ही उजाड़ा क्यूँ था।

हिज्र की रेत पे जब मुझको पटख़ना था तो फिर,
तूने आँखों के समन्दर में डुबोया क्यूँ था।

मैंने खोया है उसे, मैं ही समझ सकता हूँ,
वो बशर जान से बढ़कर मुझे प्यारा क्यूँ था।

अपनी आँखों से फ़क़त इतनी शिकायत है मुझे,
उसको जाते हुए इन आँखों ने देखा क्यूँ था।

तुझको उल्फ़त थी किसी ग़ैर से अब मैं समझा,
मेरा हर ज़ख़्म तेरे छूते ही दुखता क्यूँ था।

आँसुओं ने तो न रुकने की क़सम खायी थी,
फिर यह सैलाब तुझे देख के ठहरा क्यूँ था।

जब मेरे दिल पे लगी चोट तो मैंने जाना,
तेरा हर आँसू समन्दर से भी गहरा क्यूँ था।

ज़हन को अपने मैं समझाऊँ तो कैसे 'निर्मल',
साफ़ आईने में चेहरा मेरा धुँधला क्यूँ था।

पैमाना भर के हाथ से

पैमाना भर के हाथ से छलकाना छोड़ दे।
साक़ी शराब दे मुझे तड़पाना छोड़ दे।

नाज़-ओ-अदा से साक़िया इतराना छोड़ दे।
बोतल दिखा के दूर से तरसाना छोड़ दे।

यूँ ही पिलाये जा मुझे दिन हो कि रात हो,
हालत को मेरी देख के घबराना छोड़ दे।

तू भी भुला न पायेगा ताउम्र अब मुझे,
मैं तुझको भूल जाऊँ यह समझाना छोड़ दे।

यह मुद्दतों की प्यास जो मेरे लबों पे है,
अपनी अदाओं से इसे भड़काना छोड़ दे।

खुलकर बरस ही जा मेरे प्यासे लबों पे तू,
या ज़ुल्फ़ अपनी खोलके लहराना छोड़ दे।

बाँहों में भरके थाम ले या मुझको साक़िया,
मदहोश करके यूँ मुझे, बहकाना छोड़ दे।

तेरी शराब का नशा फैला है चारसू,
मुझमें समा जा साक़िया शरमाना छोड़ दे।

'निर्मल' नज़र में रह गये जब तेरे फ़ासले,
ख़्वाबों में भी तू फिर मेरे अब आना छोड़ दे।

पहले तेरी शोख़ हँसी को

पहले तेरी शोख़ हँसी को हमने चुनर धानी समझा।
और फिर प्यार में डूबी रुत को अल्हड़ दीवानी समझा।

प्यार में हम ख़ामोश ही रहते तो शायद बेहतर होता।
दिल की बात ज़बाँ से कह दी, सबने नादानी समझा।

ख़ून-ख़राबा, क़त्ल-ए-आम और चीख़ों से भरपूर मिला।
तेरे तसव्वुर में हमने जो मौसम रूहानी समझा।

हमने तो बस इश्क़ की ज़िद पकड़ी थी पर इस दुनिया ने,
या तो बग़ावत समझा उसको या फिर नादानी समझा।

तेरे मेरे टकराने का क़िस्सा आम हुआ था जब,
मैंने तो उल्फ़त समझा था, तूने क्या जानी समझा।

बस इतना समझे नामुमकिन सा है समझना दुनिया को,
या कहिये हमने भी दुनिया को कुछ कुछ यानी समझा।

प्यार में जब दुनिया में भटककर भी 'निर्मल' मंज़िल न मिली।
हमने संग-ए-मील को ही बस मंज़िल का मानी समझा।

ज़िद पे हो मुझको भुलाने की

ज़िद पे हो मुझको भुलाने की भुलाते जाना।
मस्लेहत क्या है, मगर इतना बताते जाना।

ग़ैर को जब तू नसीब अपना बनाते जाना।
मेरे हाथों की लकीरों को जलाते जाना।

तुम गिरा दो मुझे नज़रों से कोई बात नहीं,
साफ़ हो जाये अगर दिल तो उठाते जाना।

ख़्वाब में डूबे रहें तुम से बिछड़कर सो तुम,
यूँ न जाना कि कहीं नींद उड़ाते जाना।

हम बुरे शख़्स हैं आये तो हो मिलने हमसे,
पर ज़माने से ज़रा छुपते-छुपाते जाना।

प्यार सच्चा तुम्हें मिलने की बस इक सूरत है,
नाम अपना भी शहीदों में लिखाते जाना।

हम वफ़ाओं के सफ़र वालों की तो आदत है,
राह-ए- उल्फ़त में सदा लुटते-लुटाते जाना।

दूर हमसायगी से जा तो रहे हो 'निर्मल',
दरम्याँ की ज़रा दीवार गिराते जाना।

हिज्र में डूबा तो डूबा ही

हिज्र में डूबा तो डूबा ही उसे रहने दिया।
दिल शिकस्ता था शिकस्ता ही उसे रहने दिया।

कोई तस्कीन मुहब्बत में गवारा न हुई,
दिल जो तड़पा तो तड़पता ही उसे रहने दिया।

याद करना उसे फिर इश्क़ की तौहीन लगी,
दिल उसे भूला तो भूला ही उसे रहने दिया।

इश्क़ हो जाता धुआँ हमको यह मंज़ूर न था,
आग दिल में थी सो जलता ही उसे रहने दिया।

जो फ़क़त तेरे लिए था सो सुनाते भी किसे,
शेर जो लिक्खा तो लिक्खा ही उसे रहने दिया।

बात कुछ इश्क़ में आगे तो बढ़ायी होती,
दिल जो धड़का तो धड़कता ही उसे रहने दिया।

थोड़ा लड़ लेते, झगड़ लेते, ज़रा झुँझलाते,
हमसे शिकवा था तो शिकवा ही उसे रहने दिया।

प्यार में जीतना कहते हैं इसे ही 'निर्मल',
दिल जो हम हारे तो हारा ही उसे रहने दिया।

हम एक फूल थे पत्थर को

हम एक फूल थे पत्थर को आज़मा बैठे।
बड़ी ही भूल की जो तुमसे दिल लगा बैठे।

सुना है, जब से हमें दिल से वो भुला बैठे।
हम उनकी याद में किस किस से दिल लगा बैठे।

ज़रा तो प्यार से इक बार सोच लेते तुम,
हमारे प्यार का मतलब ग़लत लगा बैठे।

बहुत ही ख़ूब किया आपने मेरा इंसाफ़,
गुनह किसी का, किसी को सज़ा दिला बैठे।

मैं गुज़रे वक़्त का जब पूछता था उनसे पता,
वो भूल से मुझे मेरा पता बता बैठे।

यह बरसों बाद हमें जाके अब यक़ीन हुआ,
कि बरसों पहले हमें दिल से वो भुला बैठे।

वो ज़िन्दगी से निकल तो गये मगर 'निर्मल',
हमारे दिल में हमेशा को घर बना बैठे।

इक इशारा सा नज़र

इक इशारा सा नज़र आता है कुछ।
और फिर इस दिल को हो जाता है कुछ।

दिल मेरा जब तुझको बतलाता है कुछ।
आते-आते लब पे रुक जाता है कुछ।

आ जा, जल्दी से क़दम आगे बढ़ा,
प्यार में सोचा नहीं जाता है कुछ।

दिल मेरा तन्हा नहीं तड़पा कभी,
लाज़िमी तुझको भी तड़पाता है कुछ।

इश्क़ क़ाबू में नहीं रहता है फिर,
हुस्न जब चुपके से कह जाता है कुछ।

तेरी ख़ामोशी के हैं क़ायल सभी,
तेरा चुप रहना असर लाता है कुछ।

देखकर तेरा गुलाबों सा बदन,
मेरे होटों से फिसल जाता है कुछ।

चूमते हो जब भी 'निर्मल' तुम मुझे,
होट पर मीठा सा जम जाता है कुछ।

उदास शाम को बाँहों में

उदास शाम को बाँहों में भर के बैठा हूँ।
तुम्हारा अक्स नज़ारों में भर के बैठा हूँ।

तवील कितनी शब-ए-हिज्र हो, ख़ुदा जाने,
उमीद-ए-वस्ल ख़्यालों में भर के बैठा हूँ।

ख़ुदा करे, न कभी आँख से मेरी छलके,
यह गहरा दर्द जो रिश्तों में भर के बैठा हूँ।

तेरी ख़ुशी में ये आँखें छलक उठें तो क्या,
तेरी ख़ुशी ही तो अश्कों में भर के बैठा हूँ।

कभी खिले थे तेरे फूल ज़िन्दगानी में,
वही महक तो मैं साँसों में भर के बैठा हूँ।

जो इन्तज़ार तेरा कर दे राह से ओझल,
गुबार-ओ-गर्द वो नज़रों में भर के बैठा हूँ।

अब और कितना सतायेगी मुझको तन्हाई,
जुदाइयों की जो रातों में भर के बैठा हूँ।

ज़हे-नसीब, तेरी क़ुरबतों ने बख़्शे थे,
वो फ़ासले जो निगाहों में भर के बैठा हूँ।

अकेला हो गया ऊँचाई पर बहुत 'निर्मल',
मैं अब मचान से नीचे उतर के बैठा हूँ।

मेरा दिल तड़प रहा है

मेरा दिल तड़प रहा है, तुझे दिल से प्यार करके।
मगर अच्छा लग रहा है, तेरा इन्तज़ार करके।

मेरी जान की तू क़ीमत, न समझ सकेगा फिर भी,
मुझे देखना है तुझ पर, ज़रा जाँ निसार करके।

तेरी चाहतों को पूजूँ, तेरी हसरतें मिटा दूँ,
कभी छोड़कर न जाऊँ, तुझे बेक़रार करके।

है कहाँ   तुझे यह फ़ुर्सत, कि तू एक पल भी सोचे,
मेरा दिल दुखा है कितना, तेरा ऐतबार करके।

यह मेरी ख़ुशी का मातम, ज़रा देख ले ज़माना,
वो चला गया है दिल को, मेरे सोग़वार करके।

वो सड़क भी अब तो तन्हा, मेरे दिल सी दीखती है,
अभी भीड़ जिससे गुज़री, बड़ा हाहाकार करके।

मेरी नेकियों के बदले, मुझे क्या दिया है तूने,
अभी देखना है 'निर्मल', ज़रा यह शुमार करके।

न तड़पें तेरे लिए

न तड़पें तेरे लिए तुझसे प्यार भी न करें।
और उसपे हुक्म कि हम इन्तज़ार भी न करें।

अब अपने ज़ख़्मों की परवाह करना छोड़ दिया,
यह नेक काम मेरे ग़मगुसार भी न करें।

हरे दरख़्त को तुम काट डालो हम लेकिन,
लिपट के उससे उसे अश्कबार भी न करें।

तुझे यह शक़ है कि तेरे नहीं हैं हम तो क्या,
अब अपने दिल पे ज़रा ऐतबार भी न करें।

वो चाहते हैं हम उनसे बिछड़ के ख़ुश भी रहें,
और उनके हिज्र में दिल सोग़वार भी न करें।

ज़माने वाले मुहब्बत के जब ख़िलाफ़ हैं तो,
मुहब्बतों का वो फिर कारोबार भी न करें।

भुला ही डाला है जब यूँ बुरी तरह 'निर्मल',
हमारे दिल को वो फिर बेक़रार भी न करें ।

यह फ़ासला है जो नज़रों

यह फ़ासला है जो नज़रों से दूर हो जाये।
हसीन शाम है, कुछ तो ज़रूर हो जाये।

मेरे नशे में कुछ इस तरह चूर हो जाये।
शराब हूँ मैं वो मेरा सुरूर हो जाये।

तड़प यह प्यार की बरदाश्त अब नहीं होती,
क़रीब आ नहीं सकता तो दूर हो जाये।

मुहब्बतों में शरारत भी थोड़ी लाज़िम है,
चलो कि मिल के ज़रा सा क़ुसूर हो जाये।

तू आफ़ताब है, ज़र्रा हूँ माना मैं लेकिन,
सरापा तेरा है जो मेरा नूर हो जाये।

तमाम उम्र दिया ही दिया है तुमने हमें,
तुम्हारे नाम पे कुछ तो हुज़ूर हो जाये।

तुम्हारे हुस्न को देखा है इस क़दर 'निर्मल',
न ऐसा हो कहीं, ख़ुद पर ग़ुरूर हो जाये।

मुहब्बत में तेरे करने को शिकवा

मुहब्बत में तेरे करने को शिकवा छोड़ देते हैं।
चलो अब तुझसे मिलने का इरादा छोड़ देते हैं।

चलो क़ुर्बान हो जाते हैं तेरे प्यार की ख़ातिर,
हम अब तन्हाई को भी अपनी तन्हा छोड़ देते हैं।

ये भीगे से इशारे छलछलाती तेरी आँखों के,
हमारे ज़हन में सोचों का दरिया छोड़ देते हैं।

बुला लेना उन्हें वापस, बहुत तक़लीफ़ देती हैं,
तेरी यादों को रस्ते में अकेला छोड़ देते हैं।

जवाँ रुत है,हसीं मौसम, तक़ाज़ा-ए-मुहब्बत भी,
तो हल्का सा तेरी जानिब इशारा छोड़ देते हैं।

तुम अपनी मिल्कियत को देखकर मग़रूर होते हो,
जहाँ तय है कि पंछी भी बसेरा छोड़ देते हैं।

कभी तो रास्ते में तुम पलटकर हमको देखोगे,
इसी हसरत में 'निर्मल' दिल मचलता छोड़ देते हैं।

सच कहना हाल कैसा

सच कहना हाल कैसा तुम्हारा हुज़ूर था।
कहते हो तुम कि ख़ुश थे मैं जब तुमसे दूर था।

मय से नहीं,नशे से मैं उल्फ़त के चूर था।
दिल पर मेरे जो हुस्न का तेरे सुरूर था।

दिल पर हज़ार चोटों शिकस्तों के बावजूद,
उस आइने को अपने पे कितना गुरूर था।

नज़दीक़ियाँ बढ़ाने का अन्जाम यह हुआ,
तेरे क़रीब होके भी मैं तुझसे दूर था।

इनकार चाहे लाख करो मुझसे तुम मगर,
मेरे तुम्हारे बीच में कुछ तो ज़रूर था।

फिर तुझको मेरी मस्त निगाहों से क्यूँ गिला,
जब तुझको अपने हुस्न पे इतना गुरूर था।

रिश्ते ही जब नहीं रहे 'निर्मल' तो क्या मलाल,
मेरा क़ुसूर था कि तुम्हारा क़ुसूर था।

बात अपनी तुझसे मनवाना

बात अपनी तुझसे मनवाना बड़ा अच्छा लगा।
रास्ते में तेरा शरमाना बड़ा अच्छा लगा।

तेज़ क़दमों से गुज़र जाना तेरा पहलू से फिर,
आगे जाकर थोड़ा रुक जाना बड़ा अच्छा लगा।

पहले तुझको देखते थे और फिर सारे मुझे,
सारी महफ़िल को मैं दीवाना बड़ा अच्छा लगा।

तेज़ लौ में शम्अ की जब-जब भी परवाने जले,
इस जहाँ को उनका अफ़साना बड़ा अच्छा लगा।

तूने उसने क्या, ज़माने भर ने दिल तोड़ा मेरा,
चोट पर चोटों का यूँ खाना बड़ा अच्छा लगा।

ऐ ख़ुदा! दुनिया की सारी दौलतें पाने के बाद,
तेरे आगे हाथ फैलाना बड़ा अच्छा लगा।

मुझसे रिश्ता तोड़ने के बाद रस्ते में मुझे,
तेरा वो छूकर गुज़र जाना बड़ा अच्छा लगा।

फूटकर रोया था वो 'निर्मल' मेरी मैयत पे जब,
मुझको अपना दम निकल जाना बड़ा अच्छा लगा।

बरसी थी ख़ूब खुल के घटा

बरसी थी ख़ूब खुल के घटा याद है तुझे।
बारिश में भीगने का मज़ा याद है तुझे।

ख़ुद को मैं भूल बैठा हूँ तेरी जुदाई में,
तुझसे मैं कब मिला था बता याद है तुझे।

हर दर्द भूल जाऊँगा तेरा दिया हुआ।
इक बार कह दे अपनी जफ़ा याद है तुझे।

रह-रह के गूँजती है मेरे दिल में आज भी,
भूली हुई वो अपनी सदा याद है तुझे।

क्या बात है कि तर्क-ए-तअल्लुक़ के बाद भी,
मुड़ -मुड़ के देखने की अदा याद है तुझे।

काटी थी तेरे हक़ में जो मैंने तमाम उम्र,
अपने गुनाह की वो सज़ा याद है तुझे।

'निर्मल' ज़रा सी बात पे तू हो गया ख़फ़ा,
अपना भला-बुरा भी कहा याद है तुझे।

जो फूल मुरझा चुके

जो फूल मुरझा चुके हैं खिलाते जाना जी।
चमन से गुज़रो ज़रा मुस्कुराते जाना जी।

दिलों के फ़ासले कुछ यूँ मिटाते जाना जी।
क़रीब और क़रीब और आते जाना जी।

बिछड़ के जी लेंगे तुमसे बस इक हसीन सा ख़्वाब,
हमारी आँखों में रहकर बसाते जाना जी।

कहोगे जो भी वो मानेंगे पर क़सम है तुम्हें,
यह ऐरों-ग़ैरों से दिल मत लगाते जाना जी।

यह माना काँच के टुकड़ों से दिल में चुभते हैं,
मगर ये रिश्ते हैं फिर भी निभाते जाना जी।

फ़लक पे सबको बराबर है हक़ चमकने का,
सितारों जैसे सदा झिलमिलाते जाना जी।

सफ़र पे जा तो रहे हो मगर क़सम है तुम्हें,
हमारी याद को दिल में बसाते जाना जी।

यह माना प्यार के क़ाबिल नहीं हैं आपके हम,
मगर हमें भी ज़रा आज़माते जाना जी।

तुम्हारे दिल में कहीं हम बसे हैं तो 'निर्मल',
ज़रा सा चीर के सीना दिखाते जाना जी।

दिल उसका मेरी तरह उसको

दिल उसका मेरी तरह उसको बेक़रार करे।
यह तय ही कब था वो बदले में मुझसे प्यार करे।

मेरे क़लम को ख़ुदा इतना धारदार करे।
कि चीख़-चीख़ के हर लफ़्ज़ प्यार -प्यार करे।

दिल उसने तोड़ दिया मेरा कोई बात नहीं,
कहाँ था वादा वो मुझ पर भी दिल निसार करे।

किया था प्यार तो ऐसी कोई भी शर्त न थी,
मैं जिससे प्यार करूँ वो भी मुझसे प्यार करे।

यह बद्दुआ है जा तू भी किसी का मेरी तरह,
तड़प-तड़प के मुहब्बत में इन्तज़ार करे।

तू प्यार करता जा, करता जा, करता जा प्यारे,
भले ज़माना मुहब्बत का कारोबार करे।

अदब को इतनी तो उम्मीद तुझसे है 'निर्मल',
ज़माने भर को सुख़न तेरा ख़ुशगवार करे।

यह बेबसी है कि तुझ पर ही

यह बेबसी है कि तुझ पर ही दिल निसार करूँ।
तुझी से ज़ख़्म मैं खाऊँ, तुझी से प्यार करूँ।

ख़ता-ए-इश्क़ से ख़ुद को मैं शर्मसार करूँ।
चुरा के तेरा ही दिल तुझको बेक़रार करूँ।

गुलों में रंग भरूँ, हर कली से प्यार करूँ।
किसी भी तौर इस आलम को ख़ुशगवार करूँ।

ग़ज़ल के रंग में पैदा मैं वो निखार करूँ।
बड़े ही शौक़ से जिसको मैं नज़र-ए-यार करूँ।

फ़क़त मैं अपनी ख़ुशी के लिए भला कैसे,
हर एक दर्द ज़माने का दरकिनार करूँ।

वो जिसपे मुझको भरोसा था साथ छोड़ गया,
फिर और किसपे ज़माने में ऐतबार करूँ।

भरी बहार में उजड़ा था वो दरख़्त कभी,
कोई बता दे उसे कैसे सायादार करूँ।

ये नफ़रतों की जो चारों तरफ़ हैं दीवारें,
इन्हें गिराने की सूरत पे कुछ विचार करूँ।

धड़कना बन्द न कर दे कहीं यह दिल 'निर्मल',
तुम्हारे आने का कब तक मैं इन्तज़ार करूँ।

लगता है कि चुभन मेरे ही

लगता है कि चुभन मेरे ही हाथों में पहले से थी।
वरना ऐसी बात कहाँ इन काँटों में पहले से थी।

ख़्वाब की दुनिया में भी पहुँचकर दिल मेरा बेचैन रहा,
कोई तल्ख़ हक़ीक़त मेरी आँखों में पहले से थी।

प्यार के फूल तो आज खिले हैं लेकिन तेरे सर की क़सम,
तेरे प्यार की ख़ुशबू मेरी साँसों में पहले से थी।

भीड़ तो आज चली है तेरे साथ उसे यह क्या मालूम,
तेरे क़दमों की आहट इन राहों में पहले से थी।

तेरा मेरा टूट के यूँ मिलना इतने बरसों के बाद,
यह बेताबी हिज्र की तन्हा रातों में पहले से थी।

मेरे प्यार के दर्द को तूने अब जाकर समझा 'निर्मल',
लेकिन तेरी चाहत मेरे अश्कों में पहले से थी।

उल्फ़त के सफ़र में हर रस्ता

उल्फ़त के सफ़र में हर रस्ता, हर अपना ठिकाना भूल गये।
दो गाम चले और फिर यह हुआ, हम पाँव बढ़ाना भूल गये।

इस शहर-ए-मुहब्बत में हमको, कुछ इतने गहरे ज़ख़्म मिले,
क्या लेते वफ़ा का नाम कभी,हम दिल ही लगाना भूल गये।

शब भर की उदासी का आलम, छाया है तुम्हारी आँखों में,
लगता है कि अपनी पलकों पर, तुम ख़्वाब सजाना भूल गये।

मिलते थे कभी बरसों पहले, छुप-छुप के अँधेरी गलियों में,
वो अपना सलीक़ा भूल गये, हम अपना ज़माना भूल गये।

दुनिया के मसाइल में उलझे, बरसों में मिले हम आज तो बस,
इक दूजे को देखा हैरत से, मिलने का बहाना भूल गये।

हालात से हम लड़ते ही रहे, इक तेरी मुहब्बत की ख़ातिर,
घुट-घुट के जिये हर साँस पे हम, इस दिल का फ़साना भूल गये।

देखा नहीं जाता अब हमसे, हर सिम्त तबाही का आलम,
इस शोर में घिरकर हम अपनी, उल्फ़त का तराना भूल गये।

ख़ुद को तो मिटाने में 'निर्मल', हमने न क़सर छोड़ी कोई,
इक तेरे हसीं ख़्वाबों को हम, आँखों से मिटाना भूल गये।

मैं कैसे मान जाऊँ

मैं कैसे मान जाऊँ यह चर्चा किए बग़ैर।
मुझसे बिछड़ गया है वो शिकवा किए बग़ैर।

गुमनाम जीना चाहा मुहब्बत में जब तेरी,
दुनिया ने मुझको छोड़ा न रुसवा किए बग़ैर।

रिश्तों के टूटने का यह आलम है तो मुझे,
अब ज़िन्दगी न छोड़ेगी तन्हा किए बग़ैर।

क़ुर्बां हुआ मैं तेरी मुहब्बत पे ग़म नहीं,
ग़म यह है, मर गया मैं मुदावा किए बग़ैर।

काँधे पे अपनी लाश को रखकर मैं उम्र भर,
ढोता रहा हयात से शिकवा किए बग़ैर।

पहले यह शर्त है, तू मेरे होट चूम ले,
पीता नहीं मैं ज़हृ भी मीठा किए बग़ैर।

'निर्मल' मरीज़-ए-दिल जो तड़पता है इश्क़ में,
मत छोड़कर तू जा उसे अच्छा किए बग़ैर।

जज़्बात कभी सिक्कों में

जज़्बात कभी सिक्कों में तोला नहीं करते।
ऐ पाक मुहब्बत! तेरा सौदा नहीं करते।

पानी के इवज़ देते हैं पौदों को पसीना,
वादों पे जो बरसात के बैठा नहीं करते।

हँसकर वो लगाते हैं सलीबों को गले से,
जो सर को किसी दर पे झुकाया नहीं करते।

ज़िन्दा है उन्हीं लोगों से दुनिया में मुहब्बत,
हक़ अपनी वफ़ाओं का जो माँगा नहीं करते।

कौन उनको बताये कि यह तौहीन-ए-अदब है,
बेवज्ह कभी तन्ज़ उछाला नहीं करते।

मन्दिर हो, वो मस्जिद हो,कि महबूब का घर हो,
हम सर को झुकाए बिना गुज़रा नहीं करते।

जब आगे बढ़ा देते हैं हम क़दमों को 'निर्मल',
फिर मुड़के कभी पीछे को देखा नहीं करते।

एहसास की पलकों पर

एहसास की पलकों पर, आँसू जो नज़र आये।
जज़्बात मेरे दिल के, काग़ज़ पे उतर आये।

है मेरी क़सम तुझको, तू जब भी इधर आये।
उस जान-ए-तमन्ना की, लेकर तू ख़बर आये।

हसरत यह मेरे दिल में, मुद्दत से सँवरती है,
कुछ आपके लहजे का, मुझमें भी असर आये।

मैं ग़म का मुसाफ़िर हूँ, चाहूँगा फ़क़त इतना,
ख़ुशियों का घना साया, मुझको भी नज़र आये।

इक तेरी गली हमको, ढूँढे से न मिल पायी,
हम सारे ज़माने की, गलियों से गुज़र आये।

दम भर को ठहरने की, मोहलत न मिली हमको,
कहने को तो रस्ते में, कितने ही शजर आये।

यह बात है नामुमकिन, पर सोच तो सकता हूँ,
वो चाँद कभी मेरे, आँगन में उतर आये।

जिन लोगों ने 'निर्मल' पर, ख़ुशरंग नज़र डाली,
वो तेरे तसव्वुर में, डूबे से नज़र आये।

इन्तज़ार और निगाहों का

इन्तज़ार और निगाहों का बढ़ा देता है।
कोई झोंका जो मेरे दर को हिला देता है।

दिल की ख़ामोश फ़िज़ाओं में सदायें देकर,
कौन जज़्बात के तारों को हिला देता है।

मेरा हमदर्द है, फिर उससे मुझे क्या शिकवा,
तल्ख़ बातें भी अगर हँस के सुना देता है।

मेरी पलकों पे मचलता हुआ हर इक आँसू,
मुझसे पहले ही मेरा हाल बता देता है।

मुझ तक आते हुए वो तेरा कहीं मुड़ जाना,
मेरी तन्हाई की शिद्दत को बढ़ा देता है।

एक लम्हे को मेरे ख़्वाब में तेरा आना,
रात भर मुझको तड़पने की सज़ा देता है।

यूँ मिला है मुझे मेरी ही वफ़ाओं का सिला,
जो भी मिलता है मुझे मिल के दग़ा देता है।

तेज़ बारिश में मिले धूप की रंगत 'निर्मल',
जब वो अश्कों में तबस्सुम को मिला देता है।

दुनिया से क्या कहते-फिरते

दुनिया से क्या कहते-फिरते आख़िर कैसे टूट गये।
अच्छा हुआ अपने रिश्ते जुड़ने से पहले टूट गये।

फूल ही फूल खिले थे, दिल भी मिले थे, मुलाक़ातें भी थीं,
इतनी नज़दीक़ी थी फिर भी रिश्ते गहरे टूट गये।

आपकी नीली आँखों पर कुछ कहने की कोशिश की थी,
काँपते होटों से निकले तो लफ़्ज़ हमारे टूट गये।

उलझे भी होते तो हम आपस में ही सुलझा लेते,
लेकिन अपने प्यार के रिश्तों के सब धागे टूट गये।

दुनिया भर को जीत के माना तुम ताक़तवर बन बैठे,
पर कुदरत की मार से यारो अच्छे-अच्छे टूट गये।

सौंधे बेसन की रोटी अम्मा के हाथ की खाते थे,
बदला दौर तो घर घर में मिट्टी के चूल्हे टूट गये।

भूक और प्यास से तड़पे फिर भी शम्अ सुख़न की जलाये रखी,
कितने सुख़नवर दिल के दर्द को कहते-कहते टूट गये।

ऐसी तल्ख़ हक़ीक़त 'निर्मल' सामने आई दुनिया की,
साथ तेरे जो मिलकर देखे सारे सपने टूट गये।

तेरी मासूम पलकों पर अगर

तेरी मासूम पलकों पर अगर आँसू ठहर जाते।
तो शहर-ए-दिल से कितने हादसे होकर गुज़र जाते।

फ़रिश्ते तो बहुत पहले ज़मीनों पर उतर जाते।
मगर वो आदमी के ज़ुल्म से बचकर किधर जाते।

मुहब्बत से भरी थी ज़िद वो अनपढ़ गाँव वालों की,
तुम अपने शहर का मौसम सँवर जाने पे घर जाते।

ठहर जाते ज़मीं पर यकबयक बहते हुए दरिया,
तेरे आँसू जो मेरी ख़ुश्क आँखों में उतर जाते।

अगर पहले पता होता कि ये विस्फ़ोट कर देंगे,
तो फिर रंगीं खिलौने देखकर बच्चे भी डर जाते।

खुलीं जब सुब्हदम आँखें तो लब फुटपाथ ने खोले,
न आते तुम मेरी जानिब तो बोलो फिर किधर जाते।

किसी की डूबती साँसों ने मुझसे यह कहा 'निर्मल',
घुटन कम हो गयी होती तो कुछ पल और गुज़र जाते।

यकबयक आँख में अश्कों

यकबयक आँख में अश्कों को छुपाया न गया।
तुमको देखा तो यह दिल हमसे सँभाला न गया।

बदगुमानी तो किसी तरह मिटा दी तेरी,
अपने दिल का ही मगर बोझ उतारा न गया।

यह किस एहसास की ख़ुशबू है तेरे होटों पर,
जिसको अल्फ़ाज़ के शीशे में उतारा न गया।

गर्द जमती गयी, जमती गयी, जमती ही गयी,
हमसे इस दौर का आईना सँवारा न गया।

उम्र भर आपकी आँखों में जो हम पढ़ते रहे,
हमसे उन ग़ज़लों को काग़ज़ पे उतारा न गया।

बोझ अश्कों का था पहले से यही सोच के बस,
आपके ख़्वाबों को पलकों पे सजाया न गया।

यूँ बुझा आपके जाने पे मेरा दिल 'निर्मल',
उम्र भर फिर यह दिया हमसे जलाया न गया।

आँखों में अपनी भर लूँ

आँखों में अपनी भर लूँ तेरे आँसुओं को मैं।
देखूँ ज़रा क़रीब से तेरे ग़मों को मैं।

दुनिया से तेरे जाने का मुझको यक़ीं तो है,
कैसे यक़ीं दिलाऊँ मगर आँसुओं को मैं।

दुनिया के मरहलों में उलझकर यह ग़म रहा,
सुलझा सका कभी न तेरे गेसुओं को मैं।

यह सोचकर कि इनमें कभी फूल खिल उठें,
दिल में छुपा के रख लूँ तेरे पत्थरों को मैं।

सिम्तों में बँट रहे हैं जो हर एक गाम पर,
तय कर रहा हूँ ऐसे अजब रास्तों को मैं।

रातों को उड़ते हैं जो उमीद-ए-सहर लिए,
अक्सर पकड़ता फिरता हूँ उन जुगनुओं को मैं।

जो क़ुरबतों से तेरी मयस्सर हुए मुझे,
'निर्मल' मिटा दूँ कैसे उन्हीं फ़ासलों को मैं।

मैं तन्हा कब था बहुत से

मैं तन्हा कब था बहुत से मुझे सहारे मिले।
जगह-जगह पे सफ़र में तेरे इशारे मिले।

थे ख़ुशनसीब ख़ुशी के जिन्हें किनारे मिले।
मुझे तो जब भी मिले आँसुओं के धारे मिले।

हसीन शहर में आँखों को क्या नज़ारे मिले।
बिलखते भूक से बच्चे सड़क किनारे मिले।

चलो यहाँ   से चलो और कहीं चले जायें,
यहाँ   पे दिल ही भला कब मेरे तुम्हारे मिले।

अजब असर था ज़माने का तेरी ख़ुशियों पर,
तेरी हँसी में सुलगते हुए शरारे मिले।

वो चाँद छुप गया जाकर कहीं घटाओं में,
बहुत उदास, बहुत तन्हा रात तारे मिले।

तुम्हारे शहर की फ़ितरत ही ऐसी थी 'निर्मल',
हमें तो जो भी मिले सारे ग़म के मारे मिले।

वो पहला प्यार कभी

वो पहला प्यार कभी मेरा प्यार हो न सका।
सुना है, तुझसे मेरा इन्तज़ार हो न सका।

गिला यह कब था, तुझे मुझसे प्यार हो न सका।
गिला तो यह था, कि दीवानावार हो न सका।

तक़ाज़े थे ही कुछ ऐसे तेरी मुहब्बत के,
जुदाई में भी यह दिल सोग़वार हो न सका।

वो सोहबतें थीं गुलों की कि दरम्याँ जिनके,
यह ख़ारज़ार कभी ख़ारज़ार हो न सका।

बहुत सी यादें थीं वाबस्ता आपकी जिससे,
वो दर्द दिल से मेरे दरकिनार हो न सका।

हज़ारों फूल बिखर जाते उनके क़दमों में,
हमारा दिल ही कभी हरसिंगार हो न सका।

हवा थी, धूप थी, पानी था, बाग़वाँ भी था,
तो किसलिए वो शजर सायादार हो न सका।

ज़माने भर से भला क्यूँ फ़रेब खाते हम,
यह दिल ही अपना कभी राज़दार हो न सका।

हज़ारों मील से जाते हैं लौटकर 'निर्मल',
यह दर्द लेके कि दीदार-ए-यार हो न सका।

मोड़ ऐसा न मुहब्बत

मोड़ ऐसा न मुहब्बत में कभी आये कोई।
आप तड़पायें मुझे आपको तड़पाये कोई।

ख़ाली दामन को मेरे प्यार से भर जाये कोई।
काश ऐसा भी ज़माने में नज़र आये कोई।

क़त्ल करके मुझे ज़ख़्मों से दिलायी है निजात,
वो तो मोहसिन है न क़ातिल उसे ठहराये कोई।

कैसे बदलेगा नहीं तौर-तरीक़े अपने,
इस ज़माने को ज़रा प्यार से समझाये कोई।

बुत बना डाला है हालात की चोटों ने मुझे,
मेरी हसरत है मुझे आज रुला जाये कोई।

कौन समझेगा भला कैफ़ियत-ए-दिल उसकी,
जिसकी आँखों में कभी ख़्वाब न आये कोई।

सारी दुनिया का जो एहसास जगा दे 'निर्मल',
शेर ऐसा मेरे होटों पे भी आ जाये कोई।

आँखों को ख़्वाबों से भरना

आँखों को ख़्वाबों से भरना अच्छा लगता है।
आपसे दिल की बातें करना अच्छा लगता है।

मुझको प्यार की हद से गुज़रना अच्छा लगता है।
और तुझे वादे से मुकरना अच्छा लगता है।

दुनिया की तो फ़ितरत है नफ़रत करना लेकिन,
हमको प्यार में जीना -मरना अच्छा लगता है।

पहले खिलना फूल की सूरत उसके दामन में,
और फिर उसके हाथ बिखरना अच्छा लगता है।

जिस दिन से उम्मीद बँधी है तेरे आने की,
हर पल मुझको सजना-सँवरना अच्छा लगता है।

बरसों पहले छोड़ चुका है शहर को तू फिर भी,
अक्सर तेरी गली से गुज़रना अच्छा लगता है।

ख़ाली बैठे सोचते रहना अच्छा नहीं 'निर्मल',
दुनिया में कुछ करके गुज़रना अच्छा लगता है।

यह आरज़ू है समन्दर सी

यह आरज़ू है समन्दर सी गहरी आँखों में।
मैं डूब जाऊँ तेरी नीली-नीली आँखों में।

कभी जो देखे थे तेरी कुँवारी आँखों में।
वो ख़्वाब टूट गये आके मेरी आँखों में।

तमाम उम्र वो ग़ज़लें लबों तक आ न सकीं,
पढ़ीं थीं मैंने कभी जो किसी की आँखों में।

मैं तुमसे दूर भी जाऊँ तो किस तरह जाऊँ,
बड़ी अजीब कशिश है तुम्हारी आँखों में।

ख़ुदा का ख़ौफ़ था सचमुच उन आँसुओं को भी,
न रुक सके जो तेरी इतनी प्यारी आँखों में।

तुझे जगाऊँ मैं कैसे अजीब उलझन है,
हसीन ख़्वाब हैं तेरी उनींदी आँखों में।

तुम्हारी आँखों के बारे में क्या कहूँ 'निर्मल',
अजीब इश्क़ का दरिया है प्यासी आँखों में।

तेरे ख़्याल का जादू सा

तेरे ख़्याल का जादू सा हरसू लहराये।
तेरी नज़र मेरे दिल पर ग़ज़ल न लिख जाये।

तमाम उम्र न आने का वादा टूट गया,
जो भूल से मेरे ख़्वाबों में तुम चले आये।

तमाम ज़ीस्त का दारोमदार हो जिस पर,
उस एक बात को कैसे कोई भुला पाये।

अजब ख़मोशी सी छायी है इन ख़लाओं में,
ज़रा सा पत्ता हिले, कोई इनसे बतियाये।

निगाह ठहरी है मुद्दत से ग़मज़दा दिल पर,
ख़ुशी की कोई लहर आके रक्स कर जाये।

यह कायनात मुहब्बत के दम पे ज़िन्दा है,
ज़रा सी बात ज़माने को कौन समझाये।

जो बात तुझमें है 'निर्मल' वो चाँद में भी नहीं,
वो चाँद सीख ले तुझसे कि कैसे शरमाये।

हमेशा झूमते रहना सिखा दे

हमेशा झूमते रहना सिखा दे जब चाहे।
निगाहों से तू जिसे भी पिला दे जब चाहे।

तू दर्द जिसके भी दिल में बसा दे जब चाहे।
तो ख़ुद ही चैन भी दिल को दिला दे जब चाहे।

बड़ी कशिश है मेरे दोस्त तेरे चेहरे में,
तू जिसको अपना दीवाना बना दे जब चाहे।

तेरी निगाहों से लफ़्ज़ों के फूल झड़ते हैं,
किसी को भी तू सुख़नवर बना दे जब चाहे।

कभी सिखा दे धड़कना तू पत्थरों को भी,
कभी तू दिल को भी पत्थर बनादे जब चाहे।

तू वो फ़कीर है 'निर्मल' तेरा कुछ अपना नहीं,
किसी को भी तू ख़ुदाई लुटा दे जब चाहे।

मुझको भुला के ग़ैर पे

मुझको भुला के ग़ैर पे दिल को लुटा दिया।
क्या ख़ूब मेरे प्यार का तूने सिला दिया।

पहले तो उसने मुझको फ़लक पर बिठा दिया।
फिर उसके बाद अपनी नज़र से गिरा दिया।

कुछ यूँ मेरे सवालों का उसने दिया जवाब,
बस एक अश्क अपनी पलक से गिरा दिया।

ख़्वाबों का था ख़्याल सो दरिया की रेत पर,
अक्सर घरौंदा हमने बनाया, मिटा दिया।

मजबूरियों में हम भी तुम्हें कर सके न याद,
अच्छा किया जो तुमने भी हमको भुला दिया।

माथे पे मेरे तुमने ज़रा हाथ क्या रखा,
मैंने तो अपने दिल का हर इक ग़म भुला दिया।

अब तो बता दे, मेरी वफ़ाओं का क्या हुआ,
मैंने तेरी जफ़ाओं को दिल से भुला दिया।

तशरीफ़ लाके मेरे अँधेरों में आपने,
'निर्मल' चिराग़-ए-दिल मेरा फिर से जला दिया।

सुकूँ ज़रा सा जो तेरी मुहब्बतों

सुकूँ ज़रा सा जो तेरी मुहब्बतों से मिला।
वो सिलसिला भी मेरे ग़म के सिलसिलों से मिला।

कहाँ वो मुझको मेरी अपनी चाहतों से मिला।
तुम्हारा प्यार तो दुनिया की मोहलतों से मिला।

जो कुरबतों से मुझे उम्र भर न मिल पाया,
वो प्यार तेरी जुदाई में फ़ासलों से मिला।

धड़क रहा है तेरा दिल भी साथ-साथ कहीं,
यह राज़ मुझको मेरे दिल की धड़कनों से मिला।

अँधेरी रात थी ठहरी हुई ज़माने में,
नई सहर का पता तेरे गेसुओं से मिला।

तमाम उम्र मुक़द्दर से अपने लड़ते रहे,
तुम्हारा प्यार हमें कितनी कोशिशों से मिला।

हज़ार रास्ते फैले थे सामने लेकिन,
सुराग़-ए-राहगुज़र तेरी आहटों से मिला।

सियासी दौर में मिलना दिलों का मुश्किल है,
मगर तू हाथ तो 'निर्मल' मुहब्बतों से मिला।

मुझे हमेशा को अपना बना

मुझे हमेशा को अपना बना लिया उसने।
बढ़ाया ऐसा मुहब्बत का सिलसिला उसने।

वो पहले जान के धोके से मुझसे टकराया,
फिर अपने प्यार का इज़हार कर दिया उसने।

कुछ इस तरह से वो मेरे क़रीब आया था,
मिटा के रख दिया सदियों का फ़ासला उसने।

जो राज़ खोल न पायीं तमाम ग़ज़लें मेरी,
झुकी निगाहों से अपनी बता दिया उसने।

समझ गया मैं फ़क़त ख़त को देखकर उसके,
मैं पढ़ न पाया मगर जो मुझे लिखा उसने।

वो जज़्बा क्या था फ़क़त रूह जानती है मेरी,
क़रीब आके मुझे जिस घड़ी छुआ उसने।

वो उसका ख़ास तबस्सुम अज़ीज़ है मुझको,
कि जिससे टाल दिया पल में हादसा उसने।

मैं बेवफ़ा हूँ उसे यह यक़ीन था फिर भी,
तमाम उम्र मेरा देखा रास्ता उसने।

ग़मों से चूर हूँ, यह जानता हूँ मैं 'निर्मल',
मगर न देखा कभी मुझको ग़मज़दा उसने।

तू जिस्म-ओ-जाँ से बहुत

तू जिस्म-ओ-जाँ से बहुत बेख़बर लगे है मुझे।
अजीब इश्क़ का तुझ पर असर लगे है मुझे।

मैं ऐसे वक़्त में जाऊँ तो फिर कहाँ जाऊँ,
तुम्हारा घर भी जब अपना ही घर लगे है मुझे।

ज़रा सी भी जो ख़ुशी मैं क़ुबूल करता हूँ,
ज़माने भर की बता क्यूँ नज़र लगे है मुझे।

कुछ इस तरह मैं तुझे देखने का आदी हूँ,
तेरी नज़र भी अब अपनी नज़र लगे है मुझे।

बहुत दिनों की इस आवारगी के बाद आख़िर,
अब अपने घर को मैं जाऊँ तो डर लगे है मुझे।

गुनाह हाथों का होता है, खंजरों का नहीं,
यह एक फूल है माना मगर लगे है मुझे।

बहार आयी थी 'निर्मल' मगर हरा न हुआ,
वो इक शजर है तो क्यूँ बेसमर लगे है मुझे।

ग़ैर का था तू सो कुछ

ग़ैर का था तू सो कुछ कहने की कोशिश नहीं की।
तुझको देखा तो मेरे होटों ने जुम्बिश नहीं की।

प्यार ज़िन्दा रहा फिर भी मेरे दिल में वरना,
बेवफ़ाई ने तेरी कौन सी कोशिश नहीं की।

हम भी ऊँचाई पे जा सकते थे औरों की तरह,
हमने मिट्टी से अलग होने की कोशिश नहीं की।

बाँध रक्खा था अज़ीज़ों की उमीदों ने इसे,
इसलिए दिल ने सिमट जाने की ख़्वाहिश नहीं की।

हाल-ए-दिल हमसे भी फिर उसको बताया न गया,
अपनी जानिब से ज़रा उसने भी पुरसिश नहीं की।

बारिशें आती हैं और बच के निकल जाती हैं,
मुझपे तूने मेरे मौला कभी बारिश नहीं की।

जानकर बिछड़े हो 'निर्मल' तो शिकायत कैसी,
हमने तो तुमसे बिछड़ने की गुज़ारिश नहीं की।

बहुत ही गहरा है इस दिल

बहुत   ही गहरा है इस दिल से राब्ता ग़म का।
चलेगा जाने कहाँ तक यह सिलसिला ग़म का।

पनाह मिलती है आकर ग़मों को दिल में ही,
पड़ा है जब भी तो दिल से ही वास्ता ग़म का।

जब अपने प्यार को क़ुर्बान हमको करना पड़ा,
कहाँ ख़ुशी का था वो था तो फ़ैसला ग़म का।

लबों पे जब भी तबस्सुम के फूल महके हैं,
तो याद आया है इस दिल को वाक़या ग़म का।

यह मस्लेहत थी कि हम सिर्फ़ मुस्कुराते रहें,
तो हाल दिल में कोई कैसे देखता ग़म का।

यही है सच तो फिर इस सच से मुत्मइन हो जा,
नसीब में हैं अगर ग़म तो क्या गिला ग़म का।

और उसपे बीच में आ बैठी गर्दिश-ए-दौराँ,
ख़ुशी से पहले ही इतना था फ़ासला ग़म का।

ख़ुशी के अश्क जो छलके तो यह यक़ीन हुआ,
पता ख़ुशी का वही था जो था पता ग़म का।

यहाँ   पे कौन है किसका शरीक़-ए-ग़म 'निर्मल',
ज़माने को भला किससे है वास्ता ग़म का।

नूर की इक चादर

नूर की इक चादर फैलायें, आँखें तेरी, ग़ज़लें मेरी।
दुनिया भर का अँधेरा मिटायें, आँखें तेरी, ग़ज़लें मेरी।

दिल में फिर उम्मीद जगायें, आँखें तेरी, ग़ज़लें मेरी।
वीराने में फूल खिलायें, आँखें तेरी, ग़ज़लें मेरी।

तेरी आँखें मेरी ग़ज़लें, मेरी ग़ज़लें तेरी आँखें,
तन्हाई में इक हो जायें, आँखें तेरी, ग़ज़लें मेरी।

मैं तेरी आँखों में समाऊँ, तू मेरी ग़ज़लों में समा जा।
दुनिया का हर भेद मिटायें, आँखें तेरी, ग़ज़लें मेरी।

है मेरी ग़ज़लों में मुहब्बत, तेरी प्यार भरी आँखों की,
रिश्ते गहरे करती जायें, आँखें तेरी, ग़ज़लें मेरी।

मेरी ग़ज़लों में उभरी है, तेरी आँखों की गहराई,
गहराई का राज़ बतायें, आँखें तेरी, ग़ज़लें मेरी।

क्या है कशिश तेरी आँखों में, क्या है तड़प मेरी ग़ज़लों में,
लोगों को दीवाना बनायें, आँखें तेरी, ग़ज़लें मेरी।

डूब के आँखों में तेरी मैं, मीठी ग़ज़लें कहता जाऊँ,
'निर्मल' को फ़नकार बनायें, आँखें तेरी, ग़ज़लें मेरी।